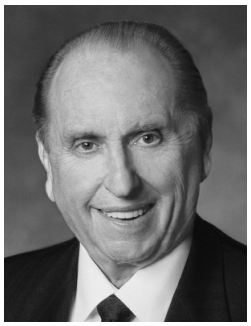

अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन द्वारा

पवित्र मन्दिर—विश्व के लिए प्रकाश-स्तंभ

इस गिरजाघर में सदस्यता की सबसे महत्वपूर्ण और उच्चतम आशीषें वे आशीषें हैं जो हम परमेश्वर के मन्दिरों में प्राप्त करते हैं ।

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, मैं आप सबों को अपना प्यार और शुभकामानाएं देता हूं और प्रार्थना करता हूं कि आज आप से बातें करते समय हमारे स्वर्गीय पिता मेरे विचारों का मार्गदर्शन करेंगे और मेरे शब्दों को प्रेरणा देगें ।

मैं उन शानदार सन्देशों पर टिप्पणी करके बात शुरू करना चाहूंगा जो आज सुबह हमने बहन आलरेड और धर्माध्यक्ष बर्टन और दूसरों से गिरजाघर के कल्याणकारी योजना के विषय में सुने हैं । जैसा कि बताया गया है, यह साल इस प्रेरित योजना—जिसने बहुतों के जीवन को आशीषित किया है, की 75 वीं वर्षगांठ मना रहा है । इस महान प्रयास को आरंभ करने वालों—दयालु और विचारशील लोगों में से कुछ को व्यक्तिगत रूप से जानने का मेरा सौभाग्य रहा है ।

जैसा धर्माध्यक्ष बर्टन और बहन आलरेड दोनों ने बताया था, वार्ड के धर्माध्यक्ष को उसके वार्ड की सीमाओं के अन्दर रहने वाले जरूरतमंद की देखभाल करने की जिम्मेदारी दी जाती है । मुझे भी ऐसा करने का सौभाग्य मिला था जब मैं साल्ट लेक सिटी में 1080 सदस्यों के वार्ड, जिसमें 84 विधवाएं शामिल थी, का युवा धर्माध्यक्ष था । वहां बहुतों को सहायता की जरूरत थी । गिरजाघर के कल्याणकारी योजना और सहायता संस्था और पौरोहित्य परिषद का मैं बहुत एहसानमंद था ।

मैं घोषणा करता हूं कि अन्तिम-दिनों के सन्तो का यीशु मसीह के गिरजाघर का कल्याणकारी योजना परमेश्वर द्वारा प्रेरित है ।

मेरे भाइयों और बहनों, इस सम्मेलन में मुझे गिरजाघर का अध्यक्ष बने तीन साल पूरे हो गए हैं । कई चुनौतियों के साथ-साथ अनगिनत आशीषों से भरे, ये साल बहुत व्यस्त रहे । मन्दिरों को समर्पित और पुनःसमर्पित करने के जो मौका मुझे मिला है वह बहुत ही अनन्दायक और पवित्र आशीषों में से हैं, और आज मैं आप से मन्दिर के विषय में बातें करना चाहता हूं ।

1902 अक्टूबर में जनरल सम्मेलन के दौरान, गिरजाघर के अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ ने अपने आरंभिक संबोधन में इस आशा को व्यक्त किया था कि एक दिन हम ''लोगों की सुविधा के लिए मन्दिरों को [विश्व] के विभिन्न स्थानों में बनाएंगे जहां इनकी जरूरत होगी ।''[1]

गिरजाघर के संगठन के बाद, 1830 से 1980 तक, पहले 150 सालों के दौरान, कर्टलैंड, ओहायो, और नावू, इलीनोय सहित, 21 मन्दिर बनाए गए थे । इसके विपरित 1980 से अब तक 30 सालों के दौरान—115 मन्दिर बनाए और समर्पित किए गए थे । कल घोषित किए गए तीन नए मन्दिरों के साथ, अब 26 अतिरिक्त मन्दिर हैं जो कि निर्माणधीन या पूर्व-निर्माणधीन अवस्था में हैं । मन्दिरों की ये संख्या लगातार बढ़ती जाएगी ।

1902 में जिस लक्ष्य की आशा अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ ने की थी वह अब वास्तविकता बन रही है । हमारी आंकाक्षा है कि मन्दिर जहां तक संभव हो हमारे सदस्यों के निकट हों ।

मानॉस, ब्राजील में एक मन्दिर वर्तमान में निर्माणाधीन है । कई साल पहले मैंने सौ सदस्यों के एक समूह के बारे में पढ़ा था जो अमेजन के वर्षावन के बीच में स्थित, मानॉस से, अपने निकटतम मन्दिर, साओ पॉलो, ब्राजील, लगभग 4000 किलोमीटर की यात्रा के लिए निकला था । इन विश्वसनीय सदस्यों ने चार दिन और रात नाव से अमेजन नदी और सहायक नदियों की यात्रा की थी । जल की इस यात्रा के बाद, उन्होंने अगले तीन दिन बसों से उबड़-खाबड़ मार्गों की यात्रा की । उनके पास बहुत कम भोजन और सोने का कोई उचित स्थान नहीं था । सात दिन और रात के बाद वे साओ पॉलो, मन्दिर पहुंचे, जहां उन्होंने अनन्त प्रकृति की धर्मविधियों को संपन्न किया । उनकी वापसी की यात्रा उतनी ही कष्ट भरी थी । फिर भी, उन्होंने मन्दिर की धर्मविधियों और आशीषों को पाया, यद्यपि उनकी जेबें खाली थी, लेकिन वे स्वयं मन्दिर की आत्मा और उन्हें मिली आशीषों की कृतज्ञता से भरे हुए थे ।[2] अब, कई सालों के बाद, मानॉस में हमारे सदस्य आनन्दित होते हैं जब वे रीओ नदी के किनारे पर मन्दिर को बनता देखते हैं । मन्दिर जहां कहीं भी बनाए जाते हैं, हमारे सदस्यों के जीवन में आनन्द लाते हैं ।

परमेश्वर के मन्दिरों में पाई जाने वाली आशीषों को प्राप्त करने के लिए किए गए

बलिदान के विवरण मेरे हृदय को स्पर्श करने में कभी भी असफल नहीं होते हैं और ये मन्दिरों के प्रति मुझे कतृज्ञता की नव-संवेदना देते हैं ।

मैं आपके साथ तीही और तारैना मॉऊ थाम और उनके दस बच्चों का विवरण बांटना चाहूंगा । यह पूरा परिवार 1960 के आंरभ में गिरजाघर में शामिल हुआ था जब प्रचारक इनके द्वीप, जोकि ताहिती के दक्षिण में 160 किलोमीटर पर स्थित था । जल्द ही वे मन्दिर में अनन्त परिवार के रूप में मुहरबंदी की आशीषों को पाने की इच्छा करने लगे ।

उस समय, मॉऊ थाम परिवार के लिए निकटतम मन्दिर, दक्षिणपश्चिम में 4000 किलोमीटर दूर, हैमिल्टन, न्यू जीलैंड में था, यहां केवल मंहगी हवाई यात्रा करके ही जाया जा सकता था । इस बड़े मॉऊ थाम परिवार, जोकि एक छोटे से खेत में बहुत तंगहाली से गरीबी में गुजारा कर रहा था, के पास हवाई यात्रा का खर्च उठाने के लिए बिलकुल भी धन नहीं था, न ही उनके द्वीप पर रोजगार का कोई मौका था । भाई मॉऊ थाम और उसके बेटे जेरार्ड ने अन्य बेटे, जोकि 4800 किलोमीटर पश्चिम में न्यू क्लेडोनिया की निकल की खदानों में काम करता था, के साथ रहने का कठीन निर्णय लिया । खदान का मालिक अपने कर्मचारियों को खदानों तक आने का खर्चा देता था, लेकिन घर वापस जाने के लिए कोई खर्चा नहीं देता ।

तीन मॉऊ थाम पुरूषों ने चार साल तक निकल की खदानों में, खुदाई और भारी अयस्क को लादने का काम किया । भाई मॉऊ थाम अपने बेटों को न्यू क्लेडोनिया छोड़कर, साल में एक बार कुछ समय के लिए घर आता था ।

चार साल तक कमर तोड़ मेहनत करने के बाद, भाई मॉऊ थाम और उसके बेटों ने न्यू जीलैंड मन्दिर जाने के लिए पर्याप्त धन बचा लिया । सिर्फ एक बेटी को छोड़कर पूरा परिवार मन्दिर गया । वे समय और अनन्तता के लिए मुहरबंद हुए थे, यह एक अवर्णनयोग्य और आनन्दायक अनुभव था ।

भाई मॉऊ थाम मन्दिर से सीधे वापस न्यू क्लेडोनिया गया था, जहां उसने और दो साल तक काम किया ताकि वह अपनी एक बेटी, उसका पति और बच्चा, जो उनके साथ मन्दिर नहीं जा पाए थे, की यात्रा का खर्चा जमा कर सके ।

अपने बाद के सालों में, भाई और बहन मॉऊ थाम ने मन्दिर में सेवा करने की इच्छा व्यक्त की थी । उस समय तक पापीटी ताहिती मन्दिर बन कर पूरा और समर्पित हो चुका था, और भाई और बहन मॉऊ थाम ने यहां दो मिशन पूरे किए थे ।[3]

मेरे भाइयों और बहनों, मन्दिर पत्थर और गारे से कहीं अधिक है । ये लोगों के विश्वास और उपवास से भरे हैं । इन्हें परिक्षाओं और गवाहियों से बनाया जाता है । ये बलिदान और सेवा द्वारा पवित्र किए जाते हैं ।

इस प्रबंध में सर्वप्रथम बनाया जाने वाला मन्दिर कर्टलैंड, ओहायो था । उस समय सन्त गरीब थे, और फिर भी प्रभु ने आज्ञा दी थी कि मन्दिर बनाया जाना चाहिए, इसलिए उन्होंने वैसा ही किया । बहुतों के पास विश्वास और कड़ी मेहनत के सिवाए देने के लिए कुछ नहीं था । एल्डर हीबर सी. किंबल ने लिखा था, ''इसे पूरा करने के लिए गरीबी, तकलीफों और कष्टों की जिन परिस्थितियों से हम गुजरे थे, उन्हें केवल प्रभु जानता है ।''[4] और फिर, जब कष्टों-भरी कड़ी मेहनत के बाद इसे पूरा कर लिया गया, सन्तों को ओहायो छोड़ने के लिए मजबूर किया गया । अन्ततः उन्हें इलीनोय राज्य में मिसीसिप्पी नदी के किनारे पर शरण मिली—यद्यपि ये शरण अस्थाई थी । उन्होंने अपनी बस्ती का नाम नावू रखा और, फिर से अपना सबकुछ दे दिया, और अपने संपूर्ण विश्वास के साथ, उन्होंने अपने परमेश्वर का दूसरा मन्दिर खड़ा कर दिया । उनके खिलाफ अत्याचार बड़ा, और नावू मन्दिर के पूरा होने से पहले ही, उन्हें एक बार फिर उनके घरों से खदेड़ा गया, उन्हें उजाड़ स्थान पर जाना पड़ा था ।

एक बार फिर संघर्ष और बलिदान शुरू हुआ जब उन्होंने सॉल्ट लेक मन्दिर को बनाने के लिए चालीस साल तक कड़ी मेहनत की जो आज इस कांफ्रैस सेंटर के दक्षिण में शान से खड़ा है ।

कुछ श्रेणी के बलिदान मन्दिर निर्माण और मन्दिर उपस्थिति से हमेशा जुड़े रहे हैं । अनगिनत लोगों ने अपने स्वयं के लिए और अपने परिवार के लिए उन आशीषों को पाने के लिए मेहनत और संघर्ष किया है, जो परमेश्वर के मन्दिरों में मिलती हैं ।

क्यों इतने लोग मन्दिर की आशीषों को पाने के लिए इतना कुछ देने के इच्छुक रहते हैं ? जो मन्दिर से मिलने वाली अनन्त आशीषों को समझते हैं वे जानते हैं कि इन आशीषों को पाने के लिए कोई भी बलिदान इतना बड़ा नहीं है, कोई भी कीमत अधिक नहीं है, कोई भी संघर्ष अधिक कठीन नहीं है । वे कोई भी दूरी तय कर सकते हैं, कोई भी बाधा पार कर सकते हैं, या किसी भी हद तक असुविधा सह सकते हैं । वे समझते हैं कि बचाने वाली धर्मविधियां जो मन्दिर में मिलती हैं वे हमें एक दिन वापस हमारे स्वर्गीय पिता के एक अनन्त परिवार से जुड़ने का अधिकार देती हैं और स्वर्ग से हम आशीषें और शक्ति का दान पाते हैं जोकि हर बलिदान और हर प्रयास की कीमत के योग्य होती हैं ।

आज हम में से अधिकतर लोगों को मन्दिर जाने के लिए अधिक कष्ट नहीं सहना पड़ता है । गिरजाघर के अस्सी प्रतिशत सदस्य मन्दिर से 320 किलोमीटर के भीतर ही रहते हैं, और बहुतों के लिए, यह दूरी और भी कम है ।

यदि आप अपने स्वयं के लिए मन्दिर जा चुके हैं, और यदि आप तुलनात्मकरूप से मन्दिर के निकट रहते हैं, ऐसे में, जो बलिदान आप कर सकते है, वह है अपने व्यस्त जीवन में से समय निकाल कर निरंतररूप से मन्दिर जाना । जो लोग परदे के उस पार जा चुके हैं मन्दिरों में उनके पक्ष में बहुत कुछ किया जाना है । जब हम उनके लिए कार्य करते हैं, हम जानते हैं कि हमने उनके उस कार्य को किया है जिसे वे अपने लिए स्वयं नहीं कर सकते । गिरजाघर के पूर्व अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ, ने एक शक्तिशाली घोषणा में बताया थाः ''उनके पक्ष में हमारे प्रयासों के द्वारा उनके बन्धनों की जंजीर उनसे अलग हो जाएगी, और उनके चारों ओर का अन्धकार मिट जाएगा, ताकि प्रकाश उनके ऊपर चमके और वे आत्मिक संसार में उस कार्य के बारे में सुने जो उनके

बच्चों द्वारा उनके लिए यहां किया गया है, और आपके कर्तव्यों के प्रदर्शन से वे आपके साथ आनन्दित होंगे ।'[5] मेरे भाइयों और बहनों, ये कार्य हमें करना है ।

मेरे स्वयं के परिवार में, हमारे अधिकतम पवित्र और कीमती अनुभवों में से वे समय हैं जब हम मन्दिर में अपने मृतक पूर्वजों की मुहरबंदी की धर्मविधियां करके एकसाथ जुड़े थे ।

यदि आप अभी तक मन्दिर नहीं गए हैं, या यदि आप *गए हैं* लेकिन वर्तमान में संस्तुति के योग्य नहीं है, कोई भी लक्ष्य आपके लिए इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना मन्दिर जाने के योग्य होना—और वहां जाना ! आपका बलिदान, हो सकता है, आपके जीवन को संस्तुति पाने की जरूरत को पूरा करता हो, आपको शायद पूरानी आदतों का त्याग करना पड़े जो आपको अयोग्य बनाती हैं । यह अपना दसमांश देने के लिए जरूरी विश्वास और अनुशासन हो सकता है । यह चाहे कुछ भी है, परमेश्वर के मन्दिर में जाने के योग्य बनें । मन्दिर संस्तुति को पाएं और इसका एक बेशकीमती संपति के रूप में आदर करें, क्योंकि यह बेशकीमती संपति ही है ।

जब तक आप प्रभु के घर में प्रवेश नहीं करते और उन सभी आशीषों को नहीं पाते जो आपका वहां इन्तजार करती हैं, आपने वह सब प्राप्त नहीं किया जो यह गिरजाघर आपको दे सकता है । इस गिरजाघर में सदस्यता की सबसे महत्वपूर्ण और उच्चतम आशीषें वे आशीषें हैं जो हम परमेश्वर के मन्दिरों में प्राप्त करते हैं ।

अब, मेरे युवा मित्रों जो अपनी किशोर अवस्था में हैं, आपका लक्ष्य हमेशा मन्दिर होना चाहिए । कुछ भी ऐसा न करें जो आपको इसकी चौखट पर पांव रखने और पवित्र और अनन्त आशीषों में भाग लेने से रोके । मैं उनकी सराहना करता हूं जो मृतकों के बपतिस्मे के लिए नियमितरूप से मन्दिर जाने के लिए, सुबह जल्दी उठते हैं ताकि इस प्रकार के बपतिस्मे में भाग ले सकें । मैं दिन की शुरूआत करने का इससे बेहतर कोई अन्य तरीका नहीं सोच सकता हूं ।

छोटे बच्चों के माता-पिता से, मैं अध्यक्ष स्पेंसर डब्ल्यू. किंबल की अक्लमंद सलाह बांटना चाहूंगा । उन्होंने कहा थाः ''यह बहुत ही अच्छा होगा यदि ... माता-पिता अपने घर के हर सोने के कमरे में मन्दिर की एक तसवीर लगा दें ताकि [उनके बच्चे], [अपने] बचपन से, उस तसवीर को हर रोज देखें जब तक यह [उनके] जीवन का हिस्सा न बन जाए । जब [वे] उस आयु में पहुंचते हैं जब उन्हें [मन्दिर में जाने से संबंधित] उस बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय लेने की जरूरत होती है, यह पहले ही लिया जा चुका होगा ।''[6]

हमारे बच्चे प्राथमिक में गाते हैंः

मैं मन्दिर को देखना चाहता हूं,
मैं एक दिन मन्दिर के अन्दर जाऊंगा ।
मैं अपने पिता के संग अनुबन्ध करूंगा ;
मैं आज्ञाकारी होने का वादा करूंगा ।[7]

अपने बच्चों को मन्दिर के महत्व को सीखाने की मैं आपसे विनती करता हूं ।

यह विश्व रहने के लिए एक चुनौतीपूर्ण और मुश्किल स्थान हो सकता है । हम अक्सर ऐसी बातों से घिर जाते हैं जो हमें भ्रष्ट करती हैं । जब आप और मैं परमेश्वर के पवित्र घरों में जाते हैं, जब हम इसके भीतर बनाए अनुबंधों को याद करते हैं, हम प्रत्येक परिक्षा को सहने और प्रत्यके लालच पर विजय पाने के अधिक योग्य बनेंगे । इस पवित्र शरणगाह में हमें शान्ति मिलेगी, हम नए और मजबूत किए जाएंगे ।

अब, मेरे भाइयों और बहनों, मैं समाप्त करने से पहले एक और मन्दिर के विषय में कहना चाहूंगा । बहुत ही शीघ्र, जब विश्व में हर जगह मन्दिर बन रहे हैं, एक मन्दिर ऐसे शहर में बनेगा जिसे स्थापित हुए 2500 साल से भी अधिक हो गए हैं । मैं उस मन्दिर के बारे में बोल रहा हूं जो अभी रोम के शहर में बनाया जा रहा है ।

एक जैसे कार्य को करते हुए और एक जैसी आशीषों और धर्मविधियों के चलते, प्रत्येक मन्दिर परमेश्वर का घर है । रोम का मन्दिर, एकमात्र ऐसा मन्दिर है, जो विश्व के महानतम ऐतिहासिक स्थानों में एक में बनाया जा रहा है, एक ऐसा शहर जहां अतीत के प्रेरित पतरस और पौलुस ने मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया था और जहां वे दोनों शहीद हुए थे ।

पिछले अक्टूबर, जब हम रोम के उत्तरपश्चिम में एक मनोहर हरे-भरे स्थान पर एकत्रित हुए थे, समर्पण प्रार्थना करने का मौका मुझे मिला था जब हमने जमीन खोदने की तैयारी की थी । मैं प्रभावित हुआ कि मैं रोम के उप-मेयर जीसेप सिआरडी और इटली के सीनेटर लूसीओ मालान को सबसे पहले जमीन पर फावड़ा चलाने के लिए कहूं । हर कोई उनके शहर में मन्दिर बनाने के उस निणर्य का हिस्सा था ।

उस दिन बादल थे लेकिन मौसम गरम था, और यद्यपि वर्षा की चेतावनी थी, केवल एक या दो बूंद ही गिरी थी । जब शानदार गायक मंडली ने, इटालियन में, "The Spirit of God," की सुन्दर पंक्तियों को गाया, सब को लगा मानो स्वर्ग और पृथ्वी मिलकर सर्वशक्तिमान परमेश्वर की प्रशंसा और कतृज्ञता में स्तुतिगीत गा रहे थे । भावनाएं आसूंओं के रूप में प्रकट हुईं थीं ।

आने वाले एक दिन, विश्वासी, इस ''अनन्त शहर'' में, परमेश्वर के पवित्र घर में अनन्त प्रकृति की धर्मविधियां पाएंगे ।

मैं अपने स्वर्गीय पिता को रोम में बनाए जा रहे और हमारे सभी मन्दिर, जहां कहीं भी वे हैं, के लिए अपना अमिट आभार प्रकट करता हूं । हर एक मन्दिर विश्व के लिए प्रकाश-स्तंभ के रूप में खड़ा है, यह हमारी गवाही की अभिव्यक्ति है कि परमेश्वर हमारा पिता जीवित है, कि वह हमें आशीष देना चाहता है और, अवश्य ही, वह सभी पीढ़ी के अपने बेटे और बेटियों को आशीष देना चाहता है । हमारे सभी मन्दिर इस बात की अभिव्यक्ति है कि मृत्यु के बाद का जीवन उतना ही सत्य और निश्चित है जितना हमारा जीवन यहां पृथ्वी पर सत्य और निश्चित है । मैं यह गवाही देता हूं ।

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, मन्दिर जाने के लिए और मन्दिर की आत्मा हमारे हृदयों

और हमारे घरों में पाने के लिए जो भी बलिदान हमें करना पड़े, काश हम उसे करें । काश हम अपने प्रभु और उदारकर्ता, यीशु मसीह, के पदचिन्हों पर चल पाएं जिसने हमारे लिए अन्तिम बलिदान दिया था, कि हमें अनन्त जीवन मिले और अपने स्वर्गीय पिता के राज्य में उत्कर्ष प्राप्त कर सकें । यही मेरी सच्ची प्रार्थना है, और मैं इसे हमारे उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह के नाम में कहता हूं, आमीन ।

विवरण

1. Joseph F. Smith, Conference Report, अक्टूबर 1902, 3 में ।
2. Vilson Felipe Santiago and Linda Ritchie Archibald, "From Amazon Basin to Temple," *Church News,* 13 मार्च 1993, 6 देखें ।
3. C. Jay Larson, "Temple Moments: Impossible Desire," *Church News,* 16 मार्च 1996, 16 देखें ।
4. Heber C. Kimball, Orson F. Whitney, *Life of Heber C. Kimball* (1945), 67 में ।
5. *Teachings of Presidents of the Church: Joseph F. Smith* (1998), 247 ।
6. The Teachings of Spencer W. Kimball (1982), एडवर्ड एल. किमबल द्वारा संपादित, 301 ।
7. जैनिस कैप पैरी, "मैं मन्दिर को देखना चाहता हूं," *Children's Songbook,* 95 ।

हमारे समय के लिए शिक्षाएं

चौथे रविवार को मलकिसिदक पौरोहित्य और सहायता संस्था सभाएं, ''हमारे समय के लिए शिक्षाएं'' के लिए समर्पित रहेंगी । नवीनत्तम जनरल सम्मेलन में दी गई एक या अधिक वार्ताओं में से प्रत्येक पाठ को तैयार किया जा सकता है । स्टेक या जिला अध्यक्ष चुन सकते हैं कि कौन सी वार्ता का उपयोग किया जाना चाहिए, या वे इस जिम्मेदारी को धर्माध्यक्षों या शाखा अध्यक्षों को सौंप सकते हैं । मार्गदर्शकों को मलकिसिदक पौरोहित्य के भाइयों और सहायता संस्था की बहनों को उसी रविवार को उन्हीं वार्ताओं के अध्ययन के महत्व पर जोर देना चाहिए ।

जो लोग चौथे रविवार के पाठों में उपस्थित होते हैं, उन्हें नवीनतम संदेशों के अध्ययन के लिए और उसे कक्षा में लाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ।

वार्ताओं से पाठ की तैयारी के सुझाव

प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा आपके साथ हो जब आप वार्ता(ओं) का अध्ययन करते हैं और उन्हें सीखाते हैं । अन्य सामग्रियों का उपयोग कर पाठ की तैयारी के लिए आप प्रलोभित हो सकते हैं परन्तु सम्मेलन की वार्ताएं ही अनुमोदित पाठ्यक्रम हैं । आपका काम है उस सुसमाचार को सीखने और जीने में दूसरों की सहायता करना जिसे गिरजाघर के नवीनत्तम जनरल सम्मेलन में सीखाया जाता है ।

वार्ता(ओं) की समीक्षा करें, उन नियमों और सिद्धान्तों पर ध्यान देते हुए जो कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करते हों । वार्ता(ओं) से कहानियों, धर्मशास्त्र संदर्भों, और वक्तव्यों को भी देखें जो इन सच्चाइयों को सीखाने में आपकी सहायता करेंगी ।

एक रूपरेखा बनाएं कि किस प्रकार नियमों और सिद्धान्तों की शिक्षा देनी चाहिए । आपकी रूपरेखा में उन प्रश्नों को शामिल करना चाहिए जो कक्षा के सदस्यों की निम्नलिखित में सहायता करे:

- वार्ता(ओं) में नियमों और सिद्धान्तों को खोजें ।
- उनके अर्थ पर विचार करें ।
- समझ, सुझाव, अनुभव, और गवाहियां बांटें ।
- उनके जीवन में इन नियमों और सिद्धान्तों को लागू करें ।

माह	चौथे-रविवार की पाठ सामग्रियां
मई 2011–अक्टूबर 2011	मई 2011 *लियाहोना** में प्रकाशित वार्ताएं
नवंबर 2011–अप्रैल 2012	नवंबर 2011 *लियाहोना** में प्रकाशित वार्ताएं

**ये वार्ताएं www.lds.org पर (कई भाषाओं में) उपलब्ध हैं ।*

© 2011 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित ।
भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/10 । अनुवाद अनुमतिः 6/10 ।
First Presidency Message, May 2011 का अनुवाद ।
Hindi । 09765 294

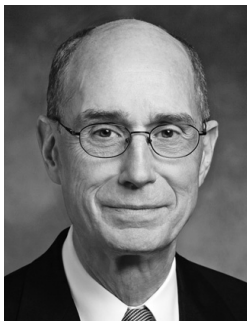

अध्यक्ष हेनरी बी. आइरिंग द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार

भलाई करने के अवसर

इन संसारिक जरूरतों को पूरा करने के प्रभु के तरीके में हमेशा ऐसे लोगों की आवश्यकता होती है जो प्रेम के कारण अपने-आपको और जो कुछ उनके पास है उसे परमेश्वर और उसके कार्य के लिए समर्पित कर देते हैं ।

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, मेरे संदेश का उद्देश्य उस काम का सम्मान और उत्सव मनाना है जो प्रभु ने पृथ्वी पर उसके गरीब और जरूरतमंद बच्चों के लिए किया है और कर रहा है । वह अपने जरूरतमंद बच्चों प्यार करता है और उन्हें भी जो मदद करना चाहते हैं । और जो मदद चाहते हैं और जो मदद करेंगे दोनों को आशीष देने के तरीक उसने बनाये हैं ।

हमारा स्वर्गीय पिता पूरी पृथ्वी पर अपने उन बच्चों की प्रार्थनाओं को सुनाता है जो खाने के लिए भोजन, अपने शरीर ढकने के लिए कपड़ों, और उस गरिमा के लिए जो आत्म-निर्भर होने में मिलती है, के लिए याचना करते हैं । ये याचनाएं उसके पास तब से पहुंच रही हैं जब से उसने पृथ्वी पर पुरूष और स्त्री को रखा है ।

जहां आप रहते हैं वहां की और पूरे विश्व भर की इन जरूरतों का आपको पता चलता है । आपका हृदय अक्सर दया की अनुभूतियों से विचलित हो जाता है । जब आप किसी से मिलते हो जो नौकरी खोजने के लिए संघर्ष कर रहा होता है, आपको मदद करने की इच्छा का अनुभव होता है । आपको तब यह अनुभूति होती है जब आप किसी विधवा के घर जाते हैं और पाते हैं कि उसके पास खाने के कुछ नहीं है । आपको तब यह अनुभव होता है जब आप रोते-बिलखते बच्चों की फोटो को देखते हो जो भूकंप या आग से बरबाद अपने घर के अवशेषों में बैठे होते हैं ।

क्योंकि प्रभु उनकी पूकार को सुनता और उनके लिए अपकी गहन हमदर्दी को महसूस करता है, उसने समय के आरंभ से ही अपने शिष्यों को मदद करने के लिए तरीके दिए हैं । उसने अपने बच्चों को उनके समय, उनके साधनों, और स्वयं को समर्पित होकर दूसरों की सेवा करने के लिए उसके साथ शामिल होने का निमंत्रण दिया है ।

उसके मदद करने के तरीके को कभी-कभी समर्पण का नियम कहा जाता है । किसी अन्य अवधि में उसके तरीके को एकता का आदेश कहा जाता था । हमारे समय में इसे गिरजाघर की कल्याणकारी योजना कहा जाता है ।

लोगों की जरूरतों और परिस्थितियों के अनुसार इस कार्य के नाम और वर्णन बदल दिए गए हैं । लेकिन इन संसारिक जरूरतों को पूरा करने के प्रभु के तरीके में हमेशा ऐसे लोगों की आवश्यकता होती है जो प्रेम के कारण अपने-आपको और जो कुछ उनके पास है उसे परमेश्वर और उसके कार्य के लिए समर्पित कर देते हैं ।

उसने जरूरतमंदों की मदद करने के अपने इस कार्य में भाग लेने के लिए हमें निमंत्रण और आदेश दिया है । हम बपतिस्मे के जल और परमेश्वर के पवित्र मन्दिर में यह कार्य करने का अनुबंध बनाते हैं । हम रविवार को जब प्रभु-भोज लेते हैं इस अनुबंध को नया करते हैं ।

आज मेरा उद्देश्य उन कुछ अवसरों की व्याख्या करना है जो उसने हमें दूसरों की मदद करने के लिए दिए हैं । मैं उन सब पर इतने कम समय में नहीं बोल सकता । मैं कार्य करने की आपकी प्रतिज्ञा को नया करना और बल देना चाहता हूं ।

इस कार्य के लिए प्रभु के निमंत्रण के बारे में एक स्तुति-गीत है जिसे मैंने तब से गाया है जब मैं एक छोटा बालक था । अपने बचपन में मैं इसके शब्दों की ताकत के बजाए इसकी अच्छी धुन पर अधिक ध्यान देता था । मैं प्रार्थना करता हूं कि आज आप इसके बोलों को अपने हृदयों में महसूस करोगे । आओ हम इन शब्दों को फिर से सुनें:

क्या आज मैंने संसार में कोई भलाई की है ?
क्या मैंने किसी जरूरतमंद की मदद की है ?
क्या मैंने दुखी को हंसाया और किसी को
खुशी दी है ?
यदि नही, तो मैं वास्तव में नाकाम रहा हूं ।
क्या आज किसी के दुख को बांटा गया है
क्योंकि मैं बांटना चाहता था ?
क्या बीमार और कमजोर की उनके मार्ग में
मदद की गई है ?
जब उन्हें मेरी मदद की जरूरत थी क्या मैं
वहां था ?
अतः उठो और कुछ अधिक करो
तब स्वर्ग में अपने घर का सपना देखना ।
भलाई करना सुखद है, एक ऐसी खुशी जिसे
नापा नहीं जा सकता,
कत्वर्य और प्रेम की आशीष ।[1]

प्रभु हमें निरंतर सचेत करने के लिए सूचना देता रहता है । कभी यह किसी जरूरतमंद के लिए अचानक दया की अनुभूति होती है । पिता ने इसे महसूस किया होगा जब उसने अपने बच्चे को गिरते और घुटने को छिलते देखा होगा । मां ने इसे महसूस किया होगा जब उसने रात को अपने बच्चे का डर से चिल्लाना सुना होगा । बेटे या बेटी ने विद्यालय में किसी के लिए दया महसूस की होगी जो दुखी या भयभीत लगता था ।

हम सभी ने दूसरों के लिए भी दया की अनुभूतियों को महसूस किया होगा जिन्हें हम जानते भी नहीं हैं । उदाहरण के लिए, जब आपने सूचना सुनी कि जापान के भूकंप के बाद प्रशान्त महासागर में लहरें उठ रही हैं, आप उन लोगों के लिए चिन्तित हो उठे जो इससे प्रभावित हो सकते थे ।

दया की अनुभूतियां आप में से उन हजारों को महसूस हुई थी जिन्होंने क्वीनसलैंड, आस्ट्रेलिया में बाढ़ के विषय में सुना था । समाचार की सूचना मुख्यरूप से जरूरतमंद लोगों का अन्दाजा था । लेकिन आप में से अधिकतर ने लोगों के दर्द को महसूस किया था । उस सचेत करने की सूचना का 1500 या अधिक गिरजाघर के सदस्य स्वयं सेवकों ने आस्ट्रेलिया में जवाब दिया था जो मदद और दिलासा देने के लिए आए थे ।

उन्होंने अपनी दया की अनुभूतियों को अपने अनुबंधों के अनुसार कार्य करने के निश्चय में बदल दिया था । मैंने उन अशीषों को देखा है जो मदद पाने वाले व्यक्ति और इस मदद को देने के अवसर का उपयोग करने वाले व्यक्ति को मिलती हैं ।

बुद्धिमान माता-पिता दूसरों की हर जरूरत में अपने बेटे और बेटियों के जीवन में आशीषें लाने के तरीकों को देखते हैं । हाल ही में तीन बच्चे स्वादिष्ट भोजन के डिब्बे लिए हमारे सामने के दरवाजे पर खड़े थे । उनके माता-पिता जानते थे कि हमें मदद की जरूरत थी, और उन्होंने हमारी सेवा करने के अवसर में अपने बच्चों को शामिल किया था ।

उस माता-पिता ने अपनी उदार सेवा से हमारे परिवार को आशीषित किया था । अपने बच्चों को इसे देने में शामिल करके, उन्होंने अपने भविष्य की पीढ़ियों को भी आशीषों दी थी । हमारे घर से जाते समय बच्चों की मुस्कान से मैं आश्वस्त था कि ऐसा ही होगा । वे अपने बच्चों को प्रभु को दी गई दया की सेवा के आनन्द के विषय में बताएंगे । मुझे याद है उस शान्त सन्तुष्टि की अनुभूति की जो मैंने अपने पिता के कहने पर पड़ोसी की जगंली घास को उखाड़ कर पाई थी । मुझे जब कभी कुछ देने के लिए निमंत्रण दिया जाता है, मैं "Sweet Is the Work, My God, My King" के बोलों को याद करता और इन पर विश्वास करता हूं ।[2]

मैं जानता हूं ये बोल उस आनन्द की व्याख्या करने के लिए लिखे गए हैं जो सब्त दिन को प्रभु की उपासना करने से मिलता है । लेकिन वे बच्चे जो भोजन लिए हमारे दरवाजे पर खड़े थे उन्हें भी प्रभु का कार्य करने में उस दिन वही आनन्द महसूस हो रहा था । और उनके माता-पिता ने भलाई करने के अवसर देखा और पीढ़ियों तक उस आनन्द को दिया था ।

जरूरतमंद की मदद करने का प्रभु का तरीका माता-पिता को अपने बच्चों को आशीष देने का भिन्न अवसर है । मैंने एक रविवार को इसे आराधनालय में देखा था । एक छोटे बच्चे ने अपने परिवार के दान के लिफाफे को प्रभु-भोज की सभा से पहले धर्माध्यक्ष को दिया था ।

मैं उस परिवार और लड़के को जानता था । इस परिवार को वार्ड में किसी की जरूरत के विषय में पता चला था । लड़के के पिता ने अधिक उदार उपवास की भेंट जोकि समान्य से अधिक थी, को लिफाफे में डालते हुए अपने बच्चे से कुछ इस प्रकार कहा था: ''हमने आज उपवास रखा है और उनके लिए प्रार्थना की थी जो जरूरतमंद हैं । कृपया इस लिफाफे को हमारी ओर से धर्माध्यक्ष को दे दो । मैं जानता हूं वह उन्हें देगें जिनकी जरूरतें हम से बड़ी हैं ।''

उस रविवार को भूख की ऐठन के स्थान, वह लड़का उस दिन को एक अधिक गर्मजोशी से याद रखेगा । मैं उसकी मुस्कान और लिफाफे को कसकर पकड़ने से बता सकता था कि उसने गरीब के लिए परिवार की भेंट ले जाने में अपने पिता के महान भरोसे को महसूस किया था । वह उस दिन को याद करेगा जब वह डिकन होगा और शायद हमेशा याद रखेगा ।

मैंने इसी खुशी को उन लोगों के चेहरों पर देखा था जिन्होंने वर्षो पहले आइडोहो में प्रभु के लिए मदद की थी । शनिवार 5 जून 1976 को टैटॉन डैम फट गया था । ग्यारह लोग मर गए थे । हजारों लोगों को कुछ ही घंटों में अपने घरों को छोड़ना था । कुछ घर बह गए थे । और सैकड़ों लोगों के घरों को केवल उस मेहनत और साधनों के माध्यम से रहने लायक बनाया जा सका था जोकि घरवालों के बस का नहीं था ।

जिन्होंने भी इस दुर्घटना को सुना दया को महसूस किया, और कुछ ने भलाई करने की पूकार को महसूस किया । पड़ोसियों, धर्माध्यक्षओं, सहायता संस्था अध्यक्षाओं, परिषदों के मार्गदर्शकों, घर के शिक्षकों, और भेंट करने वाली शिक्षकाओं ने अपने घरों और कामों को छोड़कर दूसरों के बाढ़ग्रस्त घरों को साफ करने निकल पड़े ।

एक दंपति बाढ़ के तुरन्त बाद रैक्सबर्ग छुट्टियों से लौटा था । वे अपना घर देखने नहीं गए । इसके स्थान, वे अपने धर्माध्यक्ष के पास यह पता करने गए कि उन्हें मदद करने कहां जाना है । उसने उन्हें एक परिवार की मदद के लिए भेज दिया ।

कुछ दिनों के बाद जब वे अपने घर को देखने गए । वह बाढ़ में बह गया था । वे चुपचाप अपने धर्माध्यक्ष के पास गए और पूछा, ''अब आप हम से क्या करवाना चाहते हैं ?''

आप जहां भी रहते हैं, आपने दया के उस चमत्कार को निस्वार्थ कार्य में बदलते देखा होगा । हो सकता है वह प्रकृतिक आपादा के समय न हो । मैंने एक पौरोहित्य परिषद में इसे देखा है जहां एक भाई किसी पुरूष या स्त्री की जरूरत को बताने के लिए खड़ा होता है जो उसकी और उसके परिवार को सहारा देने के काम का अवसर चाहता है । मैं कमरे

में दया को महसूस कर सकता था, लेकिन कुछ ने उन लोगों के नाम बताए जो मदद के काम करने के लिए व्यक्ति को लगा सकते थे ।

जो उस पौरोहित्य परिषद में हुआ था और जो उस बाढ़ग्रस्त घरों में आइडोहो में हुआ था वह जरूरत मंद की आत्म-निर्भर होकर मदद करने के प्रभु के तरीके का प्रमाण है । हम करूणा महसूस करते हैं, और हम जानते हैं कि प्रभु के तरीके से मदद करने के लिए क्या करना है ।

हम इस साल गिरजाघर कल्याणकारी योजना की 75 वीं सालगिरह मनाते हैं । इसे उस महान मंदी के बाद उन जरूरतमंदो की मदद के लिए बनाया था जिन्होंने रोजगार, खेती-बाढ़ी, और घरों तक खो दिया था ।

स्वर्गीय पिता के बच्चों की महान संसारिक जरूरतें हमारे समय में भी फिर से आई हैं जैसे वे पहले आई थी और भविष्य में आएंगी । गिरजाघर कल्याणकारी योजना के आधार के नियम केवल एक समय या एक स्थान के लिए नहीं हैं । वे सब समय और सब स्थानों के लिए हैं ।

ये नियम आत्मिक और अनन्त हैं । इसी कारण, इन्हें समझना और अपने हृदयों में इन्हें बैठाना हमें यह देखना और मदद करने अवसरों को लेना संभव करता है जब भी और जहां भी प्रभु हमें निमंत्रण देता है ।

कुछ नियम हैं जिन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया था जब मैं प्रभु के तरीके से मदद करना चाहता था और जब दूसरों द्वारा मेरी मदद की गई थी ।

पहला, सभी लोग खुश होते और अधिक आत्म-निर्भर महसूस करते हैं जब वे स्वयं अपनी और अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करते हैं और फिर दूसरों की मदद के लिए पहुंचते हैं । मैं उनके लिए आभारी हूं जिन्होंने मेरी जरूरत के समय मदद की थी । उनका उससे भी अधिक आभारी हूं जिन्होंने वर्षो से मुझे आत्म-निर्भर होने में मदद की थी । और फिर मैं उनका अधिक आभारी हूं जिन्होंने मुझे बताया कि मुझे कैसे अपनी संपन्नता को दूसरों की मदद के लिए उपयोग करना है ।

मैंने सीखा है कि संपन्न होने के लिए मुझे अपनी आय से कम खर्च करना होगा । उस संपन्नता से मैं सीख पाया था कि पाने की बजाए देना बेहतर होता है । यह इसलिए क्योंकि जब हम प्रभु के तरीके से मदद देते हैं, वह हमें आशीष देता है ।

अध्यक्ष मैरियन जी. रोमनी ने काल्याणकारी काम के बारे में कहा था, ''आप स्वयं गरीब होते हुए इस काम के लिए अपने-आपको नहीं दे सकते ।'' और उन्होंने अपने मिशन अध्यक्ष, मेलविन जे. बलार्ड, को इस तरह उद्धत किया: ''कोई व्यक्ति प्रभु को बिना बहुतायत से आशीष पाए भेंट नहीं दे सकता ।''[3]

मैंने इसे अपने जीवन में सच पाया है । जब मैं उदारता से परमेश्वर के जरूरतमंद बच्चों के लिए देता हूं, वह मुझे उदारता से देता है ।

दूसरा सुसमाचार नियम जोकि कल्याणकारी काम में मेरा मार्गदर्शक रहा है वह एकता की शक्ति और आशीष है । जब हम मिलकर जरूरतमंद लोगों की सेवा करते हैं, प्रभु हमारे हृदयों को एक करता है । अध्यक्ष जे. रूबेन क्लार्क जू. ने इस प्रकार कहा है: ''देना ... सामूहिक भाईचारे की अनुभूति लाता है जब सब तरह के पुरूष कंधे से कंधा मिला कर कल्याणकारी बाग या अन्य परियोजना में काम करते हैं ।''[4]

भाईचारे की वह बढ़ी हुई अनुभूति लेने वाले के साथ-साथ देने वाले के लिए भी सच है । आजतक, वह व्यक्ति जिसके बाढ़ग्रस्त रैक्सबर्ग घर में मैंने उसके साथ मिलकर कीचड़ साफ किया था, मेरे साथ लगाव महसूस करता है । और वह अपने स्वयं के लिए और अपने परिवार के लिए उस कार्य को करके महान व्यक्तिगत गरिमा महसूस करता है । यदि हमने अकेले काम किया होता, तो हम दोनों ही आत्मिक आशीष को खो चुके होते ।

यह मेरे लिए कल्याणकारी काम के तीसरे नियम को ले जाता है: अपने परिवार को अपने साथ इस काम में लगाओ ताकि वे एक दूसरे का ख्याल करना सीखें जब वे दूसरों का ख्याल रखते हैं । आपके बेटे और बेटियां जो आपके साथ दूसरों की जरूरत के समय सेवा का काम करते हैं तो इस बात की संभावना अधिक होती है कि वे जरूरत के समय एक दूसरे की मदद करेंगे ।

गिरजाघर कल्याणकारी का चौथा मूल्यवान नियम मैंने धर्माध्यक्ष के रूप में सीखा था । यह गरीब को खोजने के आत्मिक आदेश का पालन करने से आया था । यह धर्माध्यक्ष का कर्तव्य है कि वह उनकी खोज और मदद करे जिन्हें अपने और परिवार के हर प्रयास करने के बाद मदद नहीं मिल पाती है । मैंने पाया था कि प्रभु ''ढूंडो, तो पाओगे''[5] को संभव करने के लिए पवित्र आत्मा को भेजता है जब वह सच को पाने के लिए करता है । लेकिन मैंने खोज में सहायता संस्था अध्यक्षा को भी शामिल करना सीखा था । उसे आपसे पहले प्रकटीकरण मिल सकता है ।

आप में से कुछ को आने वाले महिनों में उस प्रेरणा की जरूरत होगी । गिरजाघर कल्याणकारी योजना की 75 वीं सालगिरह मनाने के लिए, विश्वभर के सदस्यों को एक दिन की सेवा के लिए निमंत्रित किया जाएगा । मार्गदर्शकों और सदस्यों को अपनी परियोजनाओं को बनाते समय प्रकटीकरण की आवश्यकता होगी ।

जब आप अपनी सेवा परियोजना बनाते हो तो इसके लिए मैं तीन सुझाव दूंगा ।

पहला, अपने आपको और जिनका आप मार्गदर्शन करते हैं आत्मिकरूप से तैयार करो । हृदय केवल उद्धारकर्ता के प्रायश्चित से ही कोमल होते हैं आप परियोजना के लक्ष्य को स्पष्टरूप से स्वर्गीय पिता के बच्चों के लिए आत्मिक और संसारिक आशीष के तौर से देख पाओगे ।

मेरा दूसरा सुझाव है, अपनी सेवा देने के लिए उन लोगों को चुने जो उसी राज्य या समाज में हृदय को स्पर्श करे जो सेवा देते हैं । जिनकी वे सेवा करते हैं वे उनके प्रेम को महसूस करेंगे । यह उन्हें खुश करने में अधिक कारगर होंगे, जैसा कि गीत वादा करता है, बजाए इसके कि उनकी केवल संसारिक जरूरतें पूरी हों ।

मेरा अन्तिम सुझाव है योजना को परिवारों, परिषदों, सहायक संगठनों, और आपके समाज के लोगों को निकट लाने के लिए बनाएं ।

एकता की अनुभूति आप जो सेवा करते हैं उसके अच्छे प्रभाव को बढ़ाएगी । और एकता की वे अनुभूतियां परिवारों में, गिरजाघर में, और समाज में विकसित होगी और परियोजना के समाप्त होने के बाद स्थाई विरासत बन जाएंगी ।

मुझे यह कहने का अवसर है कि मैं आपको बहुत अधिक धन्यवाद देता हूं । प्रभु को आपकी प्यार भरी सेवा दे कर, मैंने लोगों के उन धन्यवादों को प्राप्त करता रहा हूं जब मैं उनसे विश्वभर में मिलता हूं ।

आपने उनको उंचा उठाने का तरीका पा लेते हो जब आप प्रभु के तरीके से मदद करते हो । आप और आप जैसे उद्धारकर्ता दीन शिष्यों ने अपनी आधी रोटी को सेवा के जल लगाया है, और वे लोग जिनकी आपने मदद की है मुझे आभार की पूरी रोटी बदले में देना का प्रयास किया है ।

मैं लोगों से आभार की वही अभिव्यक्ति को पाता हूं जिनके साथ आपने काम किया है । मुझे याद है मैं अध्यक्ष एज्रा टॉफ्ट बेनसन की बगल में खड़ा था । हम प्रभु के गिरजाघर में कल्याणकारी सेवा के बारे में बात कर रहे थे । उन्होंने मुझे उनकी युवा शक्ति से चौंका दिया जब उन्होंने कहा, हाथ को दबा कर कहा, ''मैं इस काम से प्रेम करता हूं, और यही काम है !''

स्वामी की ओर से, मैं स्वर्गीय पिता के बच्चों की सेवा करने के आपके काम के अपना धन्यवाद देता हूं । वह आपको जानता है, और वह आपके प्रयास, मेहनत, और बलिदान को देखता है । मैं प्रार्थना करता हूं कि वह आपको आपकी मेहनत के फल को उनकी खुशी में देखने की आशीष देगा जिनकी आप मदद करते हो और जिनके साथ आपने प्रभु के लिए सेवा की है ।

मैं जानता हूं परमेश्वर पिता जीवित है और हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है । मैं जानता हूं कि यीशु ही मसीह है । आप और जिनकी आप सेवा करते हो उसकी सेवा करते हुए और उसकी आज्ञा का पालन करते हुए शुद्ध होते और शक्ति मिलती है । आप जान सकते हैं जैसा कि मैं जानता हूं, पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा, कि सच्चे और जीवित गिरजाघर को पुनःस्थापित करने में जोसफ स्मिथ परमेश्वर का भविष्यवक्ता था । मैं प्रमाणित करता हूं कि अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन परमेश्वर के जीवित भविष्यवक्ता हैं । वह उसके महान उदाहरण हैं जो प्रभु ने किया थाः भलाई करते जाना । मैं प्रार्थना करता हूं कि हम अपने उन अवसरों थाम लें जो ''कमजोर हाथों को मजबूत करते हैं, और कांपते घुटनों को शक्ति देते हैं ।''[6] यीशु मसीह के पवित्र नाम में, आमीन ।

विवरण

1. "Have I Done Any Good?" स्तुति गीत सं. 223 ।
2. "Sweet Is the Work," स्तुति गीत सं. 147 ।
3. Marion G. Romney, "Welfare Services: The Savior's Program," *Ensign,* नवंबर 1980, 93 ।
4. J. Reuben Clark Jr., in Conference Report, अक्टू. 1943, 13 ।
5. मत्ती 7:7–8; लूका 11:9–10; 3 नफी 14:7–8 देखें ।
6. सिद्धान्त और अनुबंध 81:5 ।

© 2011 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/10 । अनुवाद अनुमतिः 6/10 । *Visiting Teaching Message, May 2011* का अनुवाद । Hindi । 09765 294